Toppersnotes
Unleash the topper in you

सहायक सांख्यिकी अधिकारी

Assistant Statistical Officer (ASO)

राजस्थान लोक सेवा आयोग

भाग – 1

सामान्य अध्ययन (राजस्थान)

SIERRA INNOVATIONS

राजस्थान का भूगोल

1.	राजस्थान की उत्पत्ति, स्थिति, विस्तार एवं क्षेत्रफल	1
2.	राजस्थान का भौतिक प्रदेश एवं विभाग	8
3.	राजस्थान का अपवाह तंत्र	19
4.	राजस्थान की झीलें	27
5.	राजस्थान की जलवायु	32
6.	राजस्थान में मृदा संसाधन	39
7.	राजस्थान में वन–संसाधन एवं वनस्पति	44
8.	राजस्थान में खनिज सम्पदा	49
9.	राजस्थान में ऊर्जा स्त्रोत	58
10.	राजस्थान में पशुधन	67
11.	राजस्थान में कृषि एवं सिंचाई परियोजनाएँ	71
12.	राजस्थान की जनसंख्या	80
13.	राजस्थान में वन्यजीव एवं इनका संरक्षण	82
14.	राजस्थान में उद्योग	86

राजस्थान का इतिहास एवं कला संस्कृति

1.	प्राचीन राजस्थान का इतिहास • परिचय • प्राचीन सभ्याताएँ	90 92
2.	मध्यकाल राजस्थान का इतिहास • प्रमुख राजवंश एवं उनकी विशेषताएँ • राजस्थान की रियासतें और अंग्रेजों के साथ संधियाँ	98

3.	आधुनिक राजस्थान का इतिहास	138
	• 1857 की क्रांति	138
	• प्रमुख किसान आन्दोलन	140
	• प्रमुख जनजातिय आन्दोलन	142
	• प्रमुख प्रजामण्डल आन्दोलन	143
	• राजस्थान का एकीकरण	148
4.	राजस्थान कला एवं संस्कृति	
	• राजस्थान के त्यौहार	151
	• राजस्थान के लोक देवता	158
	• राजस्थान की लोक देवियाँ	162
	• राजस्थान के लोक सन्त एवं सम्प्रदाय	166
	• राजस्थान के लोकगीत	171
	• राजस्थान की लोकगायन की शैलियाँ	172
	• राजस्थान के संगीत	173
	• राजस्थान के लोक नृत्य	174
	• राजस्थान के लोकनाट्य	178
	• राजस्थान की जनजातियाँ	181
	• राजस्थान की चित्रकला	184
	• राजस्थान की हस्तकलाएँ	189
	• राजस्थान का साहित्य एवं प्रकार	191
	• राजस्थान की प्रमुख बोलियाँ	196
5.	राजस्थान की स्थापत्य कला	
	• किले एवं स्मारक	198
	• राजस्थान के जिले एवं धार्मिक स्थल	207
	• राजस्थान के प्रमुख व्यक्तित्व	210
	• राजस्थान का खान–पान एवं वेश–भूषा, आभूषण	215

राजस्थान की झील

पानी की प्रकृति के आधार पर दो भागों में बांटा जाता है

- खारे पानी की झील
  कारण – टेथिस सागर का अवशेष
- मीठे पानी की झील
  कारण – वर्षा/ताजे पानी पर निर्मित

खारे पानी की झील:-

(1) सांभर – जयपुर
(2) पंचपदरा – बाड़मेर
(3) डीडवाना – नागौर
(4) डेगाना – नागौर
(5) नांवा – नागौर
(6) कूचागन – नागौर
(7) रेवासा – सीकर
(8) काछौर – सीकर
(9) तालछापर – चुरू
(10) फलौदी – जोधपुर
(11) लूणकरणसर– बीकानेर
(12) कावोद – जैसलमेर

1. सांभर झील :- लम्बाई – लगभग 32 किमी लम्बी एवं 3-12 किमी. चौड़ी
   - स्थिति – जयपुर
   - इस झील के निर्माता – वासुदेव चौहान (बिजौलिया शिलालेख के अनुसार)
   - विशेषताएं –
     (1) यह झील राजस्थान की सबसे बड़ी व देश की तीसरी बड़ी खारे पानी की झील है। (चिल्का- उड़ीसा, पुलीकट- आंध्रप्रदेश व तमिलनाडु)
     (2) नमक उत्पादन की दृष्टि से सांभर देश की सबसे बड़ी झील है।
     (3) राजस्थान का सबसे निचला भू-भाग सांभर है ।

नोट–

सांभर झील से नमक उत्पादन

देश का → 8 प्रतिशत

राजस्थान का → 80 प्रतिशत या उससे अधिक

(4) सांभर साल्ट लिमिटेड (राज्य सरकार–40%), HSL (Hindustan Salt Limited – केन्द्र सरकार–60%) के अधीन नमक उत्पादन करती है ।

(5) सांभर झील रामसर शहर (ईरान) साईट या Wetland में शामिल एकमात्र झील है। इसे 1990 में शामिल किया गया ।

(6) क्यार – सांभर झील से प्राप्त नमक को क्यार कहा जाता है (तकनीकी – क्यारी)

(7) 2019–20 में सांभर झील के किनारे ''एवीयन बोटुलिज्म'' बैक्टीरिया के कारण यहाँ पक्षी त्रासदी हुई ।

(8) सांभर झील के किनारे ''स्पाइरूलिना शैवाल'' पाया जाता है । जिसमें 65 प्रतिशत प्रोटीन पाया जाता है ।

(9) सांभर झील के जल से खारापन दूर करने के लिए सेडाफुट्री–साल्वेडोरा वनस्पति लगाई जाती है ।

2. पंचपदरा झील

- स्थिति – बाड़मेर
- राजस्थान में सर्वाधिक खारा/सर्वश्रेष्ठ नमक पंचपदरा से उत्पादित होता है क्योंकि इसके NaCl की मात्रा 98% पाई जाती है ।
- खारवाल – पंचपदरा से नमक उत्पादित करने वाली जाति ।
- वायु प्रवाह पद्धति द्वारा नमक उत्पादन किया जाता है । जिसे रेस्ता कहते है । कुएं बनाकर नमक का उत्पादन किया जाता है, उसके कोषिया कहते है ।

(4) मोरली झाड़ी – इसकी टहनियों/पत्तों का उपयोग पंचदरा में नमक उत्पादन में किया जाता है ।

$Na_2 \rightarrow$ { चमडा साफ करने में, कागज गलाने में, Glass industry } उपयोग

3. डीडवाना झील

- स्थिति – नागौर
- सबसे घटिया किस्म का नमक उत्पादित होता है क्योंकि यहां NaCl के स्थान पर Na_2SO_4 – 90% पाया जाता है ।
- इस झील को खाल्डा भी कहते है ।
- यहां पर निजी संस्थाओं को देवल कहते है ।

नोट–

राजस्थान राज्य केमिकल वर्क्स का रासायनिक कारखाना डीडवाना में इसी झील के किनारे स्थित है ।

मीठे पानी की झील

1. जयसमन्द झील या ढेबर झील (उदयपुर)
   - निर्माता – महाराणा जयसिंह
   - क्षेत्रफल – 55 वर्ग किमी.
   - निर्माणकाल – 1685–91 AD
   - नदी – गोमती
   - विशेषताएं – कृत्रिम मीठे पानी की झीलों में यह राजस्थान की सबसे बडी झील है।
   - झील में सात टापू है । बडा टापू बाबा का "भागडा" व छोटा टापू "प्यारी"

2. पिछोला झील (उदयपुर) :-
   - निर्माता – बंजारे द्वारा (राणा लाखा के समय)
   - निर्माणकाल – 1388 AD
   - नदी – सीसारमा व बूझडा नदी
   - जीर्णोद्धार – सांगा द्वारा
   - प्रथम सौर ऊर्जा संचालित नाव
   - करणी माता मंदिर द्वितीय रोपवे (2008)

विशेषताएं –

- इस झील में नटनी का चबूतरा (निर्माता– राणा लाखा), जगमंदिर (निर्माता– जगत सिंह 1) व जगनिवास (निर्माता– जगत सिंह 2) स्थित है ।
- शाहजहां ने विद्रोह के समय पिछोला के जगमंदिर महलों में शरण ली ।

3. फतेहसागर झील (उदयपुर) या ड्यूक ऑफ कनॉट डेम :-
   - निर्माता – महाराणा जयसिंह (1688 ।क)
   - पुनर्निमाण – फतेहसिंह (1888 ।क)
   - नदी – सीसारमा व बूझडा नदी
   नोट– पिछोला झील का अतिरिक्त पानी स्वरूप सागर द्वारा फतेह सागर झील में जाता है।

विशेषताएं

- इस झील के किनारे वर्चुअल फिश एक्वेरियम बनाया गया है ।
- इस झील में सौर वेधशाला, टेलीस्कोप व नेहरू उद्यान स्थित है ।

4. उदयसागर झील (उदयपुर)
   - निर्माता – महाराणा उदयसिंह
   - निर्माणकाल – 1559–64
   - नदी – आयड/बेडच नदी
   नोट– आयड नदी इस झील में गिरने के बाद बेडच कहलाती है ।

5. रंगसागर झील (उदयपुर)

यह पिछोला व स्वरूप सागर के अतिरिक्त पानी पर बनी हुई है ।

6. बडी/जाना सागर (उदयपुर) :- राजसिंह की मां

7. राजसमन्द झील (राजसमन्द)

- निर्माता – महाराणा राजसिंह
- निर्माणकाल – 1662 AD
- नदी – गोमती
- इसके किनारे राज प्रशस्ति लिखी गई है, राजसिंह ने 251 शिलालेखों पर संस्कृत भाषा में रणछोड भट्ट तैलंग से लिखवाई । जिसमें मेवाड का इतिहास लिखा गया है ।
- नोट–
  (1) राजसमन्द झील देश की प्रथम अकाल राहत झील मानी जाती है।
  (2) इस झील के किनारे सौर घडी के अवशेष प्राप्त हुए है ।

8. नंदसमन्द झील (राजसमन्द)

9. नक्की झील (सिरोही)

- लोक कहावतों के अनुसार इसे देवताओं के नाखूनों से निर्मित माना जाता है ।
- राजस्थान की सबसे ऊँची झील 1200 मीटर
- एकमात्र झील जो जमती है ।
- ब्रासलिया जाति पूर्वजों की अस्थियाँ इसमें प्रवाहित करते है ।

10. आना सागर झील (अजमेर)

- निर्माता – अर्णोराज
- निर्माणकाल – 1136–37

11. फॉयसागर झील (अजमेर)

- निर्माता – इंजीनियर फॉय
- निर्माणकाल – 1891–92
- विशेष – राजसमन्द झील के बाद राजस्थान की दूसरी अकाल राहत वाली झील
- तुर्कों से रक्त रंजीत धरती को साफ करने के लिए अर्णोराज ने बनवायी थी ।

12. पुष्कर झील (अजमेर)

- पुष्कर झील के अन्य नाम– कोंकण तीर्थ, 52 घाटा, अर्द्धचन्द्राकार, क्रेटर, तीर्थराज, तीर्थो का मामा, पांचवा तीर्थ। (राजस्थान की मंदिरों की नगरी – पुष्कर)
- 1911 मिस मेरी ने जनाना घाट का निर्माण करवाया । वर्तमान में इसे गांधी घाट कहते है ।
- यह सर्वाधिक पवित्र झील है । (कोलायत, बीकानेर व पुष्कर में दीपदान)
- गांधीजी व बाल ठाकरे की तथा अटल बिहारी वाजपेयी की अस्थियों का विसर्जन भी इसी झील में हुआ है। (गांधीजी– पहले नाम जनाना घाट – बाद में गांधी घाट)
- कार्तिक पूर्णिमा को इस झील के किनारे मेले का आयोजन किया जाता है ।

13. कोलायत झील (बीकानेर)

- विशेषताएं –
  (1) कार्तिक पूर्णिमा को इस झील के किनारे मेले का आयोजन किया जाता है ।
  (2) चारण जाति इस झील के दर्शन नहीं करती ।
  (3) उपनाम – मारवाड का खुंदर उद्यान ।

14. गजनेर झील (बीकानेर)

- इसे पानी का शुद्ध दर्पण कहा जाता है ।

15. कायलाना या सरप्रताप सागर (जोधपुर)

- निर्माता – सर प्रताप सिंह

- कायलाना झील IGNP (इंदिरा गांधी नहर परियोजना) से जुडी हुई एकमात्र झील
- यहाँ कांगा की हस्तियाँ है ।
- यहाँ माचिया सफारी पार्क है ।

16. सिलीसेढ झील (अलवर)

- इस झील पर विनय विलास महल स्थित है ।
- राजस्थान का नंदन कानन
- निर्माण – 1845 विनय सिंह द्वारा

17. अनूप सागर } बीकानेर
18. सूर सागर
19. बुझ झील }
20. अमर सागर } जैसलमेर
21. गढीसर
22. मानसरोवर – सवाई माधोपुर
23. मानसरोवर या काडला – झालावाड
24. कनक सागर – बूंदी
25. गैब सागर या एडवर्ड सागर – डूंगरपुर
26. रामसागर } धौलपुर

    प्राप्त
27. तालाबशाही
28. चांदबावडी – आभानेरी (दौसा)
29. रानी जी की बावडी – बूंदी
30. पन्नाशाह तालाब – खेतडी (झुंझुनु)–विवेकानंद का संबंध
31. बूढा जोहड – श्रीगंगानगर
32. बालसमन्द – जोधपुर

राजस्थान की जलवायु

भूमिका:- एक अल्पावधि में किसी विशिष्ट क्षेत्र में विभिन्न जलवायविक तत्वों (तापक्रम, वायुदाब, वायुवेग, वर्षण, आर्द्रता, की औसत वायुमंडलीय दशाओं को मौसम कहते है। इसी मौसम की दीर्घ कालावधि 30-35 वर्ष का औसत जलवायु कहलाता है ।

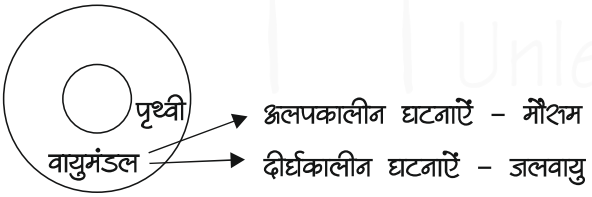

नोट :- राजस्थान की स्थिति
शीतोष्ण - 32 जिले
उष्ण - बाँसवाडा

C जलवायु वर्गीकरण	
सामान्य वर्गीकरण	व्यक्तिगत वर्गीकरण
जलवायु के प्रकार - 5 आधार - वर्षा	1. कोपेन आधार - वनस्पति, वर्षा, तापमान
	2. ट्रिवार्था - वर्षा
	3. थार्नथ्वेट - तापमान, वाष्पीकरण की मात्रा, वर्षा

(i) सामान्य वर्गीकरण

राजस्थान की जलवायु को सामान्य आधार पर पाँच भागो में बाँटा जाता है जिसका आधार वर्षा को माना जाता है ।

जलवायु	वर्षा	भौतिक प्रदेश
शुष्क कटिबन्ध जलवायु	0-20CM	पश्चिमी मरूस्थल
अर्द्धशुष्क कटिबन्ध जलवायु	20-40CM	पश्चिमी मरूस्थल
उपआर्द्र कटिबन्ध जलवाय	40-60CM	अरावली
आर्द्र कटिबन्ध जलवायु	60-80CM	पूर्वी मैदान
अतिआर्द्र कटिबन्ध जलवायु	80-120CM	हाडौती

(ii) व्यक्तिगत वर्गीकरण

1. कोपेन का जलवायु वर्गीकरण

- वर्षा व तापमान को माना गया है ।

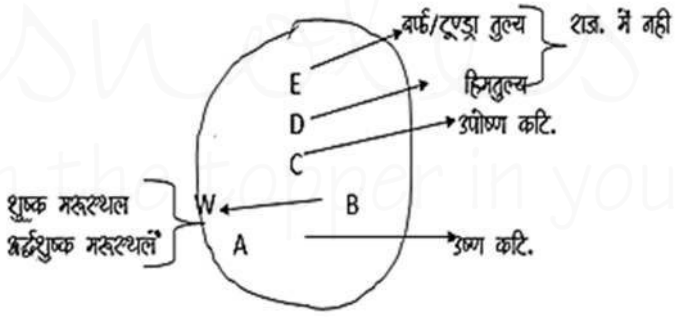

B { W- शुष्क मरूस्थल जलवायु =BWhw
S- अर्द्धशुष्क/स्टेपी जलवायु =BShw

=Aw
=Cwg

मध्यकालीन इतिहास

(1) मेवाड का इतिहास

परिचय

- मेवाड के प्राचीन नाम:
  मेवाड – उदयपुर, चित्तौड, भीलवाडा, राजसमन्द
  मेदपाट – मेर जनजाति के कारण
  प्रागवाट – प्राचीन नाम
  शिविजनपद – महाभारतकालीन नाम, इसकी राजधानी माध्यमिका / नगरी का उल्लेख पतंजलि के महाभाष्य एवं गार्गी संहिता मे मिलता है ।

गुहिल वंश की उत्पति

566 ई. मे इस वंश की नींव गुहिल अथवा गुहादित्य ने रखी इसी के नाम पर इसके वंशज गुहिलोत कहलाये । इनकी उत्पति से संबंधित विभिन्न मत प्रचलित हैं ।

1. सूर्यवंशी मत – वीर विनोद ग्रंथ के रचियता श्यामल दास के अनुसार गुहिल विशुध्द क्षत्रिय हैं तथा भगवान राम के वंशज हैं
   वीर विनोद के अनुसार गुहिल वल्लभी (गुजरात) से आये हैं ।
   कर्नल जैम्स टॉड भी इन्हें वल्लभी के शासको से संबंधित मानता है ।
2. ब्राह्मण मत – आहड मे प्राप्त लेख के आधार पर डी. आर. भण्डारकर गुहिलों को ब्राह्मण मानते है तथा आनन्दपुर (गुजरात) से आया हुआ बताते हैं ।
   गोपीनाथ शर्मा एवं मुहणोत नैणसी भी इस मत से सहमत है ।
   नैणसी के अनुसार इस वंश की 24 शाखाएँ थी । इनमें सबसे अधिक प्रसिद्ध मेवाड के गुहिल थे ।
3. विदेशी मत – अबूल फजल के अनुसार गुहिल ईरान के बादशाह नौशेखा आदिल के संतान है ।
   निष्कर्ष – गौरी शंकर हीरा चन्द्र ओझा इन्हें सूर्यवंशी क्षत्रिय मानता है और यही मत सर्वमान्य है ।

- मेवाड के शासक हिन्दुआ सूरज कहलाते है
- यह विश्व का प्राचीनतम राजवंश है जिसने एक ही क्षेत्र पर सर्वाधिक समय तक शासन किया है ।
- मेवाड के शासको का राजतिलक उन्दरी गाँव के भील सरदार करते हैं ।
- मेवाड के राजचिन्ह मे मेवाड राणाओं के साथ भीलू का भी चित्रण किया गया है ।
- मेवाड के शासक स्वयं को एकलिंगनाथ जी का दीवान मानते है तथा एकलिंगनाथ जी को मेवाड का वास्तविक शासक मानते है ।
- मेवाड के राजचिन्ह मे "जो दृढ राखै धर्म को तिहि राखे करतार" पंक्तियाँ उत्कीर्ण है ।
- पहला बडा राजा बापा रावल था ।

गुहिल

- अन्य नाम – गुहादित्य
- पिता – शीलादित्य
- माता – पुष्पावती
- पालन पोषण – कमलावती
- गुहिलो का संस्थापाक / आदिपुरूष / मूलपुरूष आदि नामों से जाना जाता है ।

1. बापा रावल : 734 – 753

- वास्तविक नाम – " कालभोज"
- रणकपुर प्रशस्ति मे कालभोज एवं बप्पारावल को अलग आदमी बताया गया है ।
- बापा रावल एक उपाधि थी ।
- इसे मेवाड का वास्तविक संस्थापक कहा जाता है ।
- यह हारित ऋषि का अनुयायी था । इसने हारित ऋषि के आशीर्वाद से 734 ई. में मान मौर्य (चित्तौड का राजा) को हराकर चित्तौड पर अधिकार कर लिया ।
- इसने नागदा (उदयपुर) को राजधानी बनाया ।
- बापा रावल ने नागदा के पास कैलाशपुरी में एकलिंगजी का मन्दिर बनावाया, एकलिंगनाथ जी मेवाड के शासको के कुलदेवता हैं । सांस बहु के मदिर का निर्माण
- बापा रावल ने मेवाड में खुद के नाम के सिक्के चलाये
- राजधानी: नागदा, आहड, चित्तौड
- बापा रावल मुस्लिम सेना को हराते हुए गजनी तक चला गया था । तथा वहां के राजा सलीम को हरा दिया तथा अपने भांजे को राजा बनाया ।
- रावलपिंडी;(Pak) शहर का नाम बापा रावल के कारण पडा ।
- सी.वी.वैद्य ने बापा रावल की तुलना फ्रांस का कमांडर चार्ल्स मार्टेल से की है ।
- मेवाड में सोने के सिक्के प्रारम्भ किये । (115 ग्रेन का सिक्का)
- बपारावल के समाधि नागदा बनी हुई है जिसे बपारावल का स्मारक के नाम से जाना जाता है ।

उपाधियां –

1. हिन्दू सूरज
2. राजगुरू
3. चक्कवै (चारों दिशाओं को जीतने वाला)

2. अल्लट 951 – 971

- मूल नाम – आलु रावल
- इसने आहड (उदयपुर) को अपनी राजधानी बनाई
- इसने आहड में वराह (विष्णु भगवान का अवतार) मन्दिर बनवाया
- सबसे पहले मेवाड में नौकरशाही की स्थापना की ।
- इसने हूण राजकुमारी हरिया देवी से शादी की थी ।
- जगत (उदयपुर) में अम्बिका माता के मंदिर का निर्माण
- किया जिसे मेवाड का खजुराहो कहा जाता है ।

3. जैत्र सिंह : (1213–53)

- जैत्रसिंह का शासनकाल ''मध्यकालीन'' मेवाड का स्वर्णकाल था । राजधानी – चित्तौड
- भूताला का युद्ध (1227 ई. में) ''जैत्र सिंह'' इल्तुतमिश के बीच हुआ इस युद्ध में जैत्रसिंह जीत गया लेकिन इल्तुतमिश ने नागदा (उदयपुर) को उजाड दिया था इसलिए जैत्रसिंह ने चित्तौड को अपनी राजधानी बनाया ।
- इस युद्ध की जानकारी ''जयसिंह सूरी'' की किताब ''हम्मीर मद मर्दन'' से मिलती है ।
- 1248 में नसीरूदीन महमूद ने चित्तौड पर आक्रमण किया जिसमे जैत्र सिंह विजय होता है ।

4. रतन सिंह : (1302–03)

- यह रावल शाखा का अंतिम शासक था ।
- रतन सिंह की रानी पदमिनी थी जो सिंहल द्वीप के राजा गंधर्व सैन एवं चम्पावती के पुत्री थी ।
- राघव चेतन नामक ब्राह्मण ने पदमिनी की सुंदरता का वर्णन अाल्लाउद्धीन खिलजी समक्ष किया, खिलजी ने पदमिनी को पाने हेतु चित्तौड पर आक्रमण किया लेकिन चित्तौड आक्रमण के वास्तविक कारण कुछ और थे ।

आक्रमण का कारण

- अलाउदीन खिलजी की साम्राज्यवादी महत्वकांक्षा
- चित्तौड का सामरिक व व्यापारिक महत्व
- सुल्तान के लिए प्रतिष्ठा का प्रश्न था
- चित्तौड का बढता हुआ प्रभाव
- 25 अगस्त 1303 को चित्तौड का पहला साका होता है ।
- रानी पदमिनी के नेतृत्व मे 1600 महिलाओं ने जौहर किया ।
- रतन सिंह के नेतृत्व मे राजपूत योद्धाओं ने केसरिया किया ।
- साका = जौहर (महिला) +.केसरिया (पुरूष)
- इस युद्ध में (साके में) ''गोरा व बादल'' (रतन के सेनापति) लडते हुए मारे गये थे । चाचा/भतीजा
- सिसोदा गाँव का लक्ष्मण सिंह अपने सात पुत्रों सहित लडता हुआ मारा जाता है ।
- खिलजी चित्तौड जीत लेता है । उसने चित्तौड का नाम खिज्राबाद कर अपने पुत्र खिज्र खाँ को सौप दिया ।
- 1311 तक खिज्र खाँ चित्तौड रहता है तत्पश्चात वह किला मालदेव मूच्छाला को सौपकर वापस चला जाता है ।
- खिज्र खाँ ने गंभीरी नदी पर पुल बनवाया था ।
- खिज्र खाँ ने यहाँ पर धाईबापीर की दरगाह का निर्माण करवाया । इस मकबरे के फारसी लेख में अलाउद्दीन खिलजी को ईश्वर की छाया और संसार का रक्षक बताया गया है ।
- इस युद्ध में इतिहासकार अमीर खुसरो भी मौजूद था । जिसने इस युद्ध का वर्णन अपनी पुस्तक खजाईन उल फुतुह अथवा तारिख – ए – अलाई मे किया ।
- 1540 मे मलिक मोहम्मद जायसी ने अवधि भाषा मे पद्मावत ग्रंथ रचना की जिसमें अालाउदीन और पदमिनी का प्रेम अख्यान है ।
- जेम्स टॉड तथा मुहणोत नैणसी ने भी इस कहानी को स्वीकार किया ।
- सूर्यमल्ल मिश्रण ने इस कहानी को अस्वीकार किया ।
- गोरा बादल चौपाई हेम रतन सूरी ने लिखी ।

5. हम्मीर: (1326–64) राणा हम्मीर

- सिसोदा गाँव (राजस्थान) के हम्मीर ने बनवीर सोनगरा को हराकर चित्तौड पर आक्रमण करके चित्तौड को जीत लिया ।
- चूँकि यह सिसोदा गाँव से आया था अतः इसके वंशज सिसोदिया कहलाये ।
- सिसोदा शासक राणा उपाधि का प्रयोग करते थे अातः मेवाड मे राणा शाखा की नींव पडती है ।
- हमीर ने सिंगोली के युद्ध मे मुहम्मद बिन तुगलक को पराजित किया ।
- इसने ''बरवडी'' (अन्नपूर्णा माता) माता का मन्दिर चित्तौड में बनवाया । यह मेवाड के गुहिल वंश की इष्टदेवी (बरवडी माता) थी ।
  (मेवाड के गुहिल वंश की कुल देवी – बाणमाता)

हम्मीर की उपाधियाँ

- कीर्ती स्तंभ प्रशस्ति में हमीर को विषम घाटी पंचानन कहा गया है अर्थात विकट युद्धो मे सिंह के समान दिखाई देने वाला ।
- रसीक प्रिया मे इसे एक वीर्य राजा बताया गया है ।
- हमीर को मेवाड का उद्धारक भी कहते है ।
- **Note** – मेवाड का द्वितीय उद्धारक – भामाशाह

6. राणा लाखा (लक्ष सिंह)

1382 – 1421

जावर में चाँदी एवं शीशा की खान निकली ।

- इसके समय छीतर बन्जारे ने "पिछोला झील" का निर्माण कराया ।
- इस झील के किनारे "नटनी का चबूतरा" है ।
- कुम्भा हाडा (हाडी रानी का भाई) नकली बूंदी की रक्षा करते हुऐ मारा गया ।

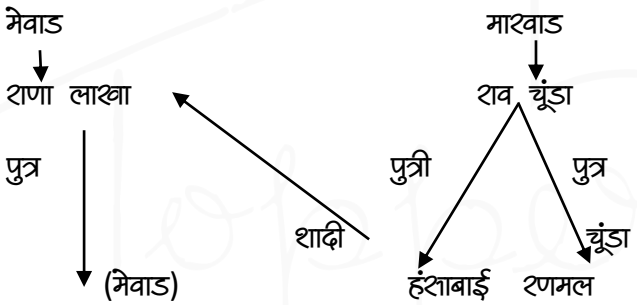

मारवाड के राव चूंडा की पुत्री हंसाबाई की शादी लाखा से इस शर्त पर होती है कि हंसा बाई से उत्पन्न पुत्र ही मेवाड का अगला शासक बनेगा, इस शादी को सम्पन्न कराने के लिए लाखा के पुत्र चुंडा ने आजीवन कुंवारा रहने की शपथ ली अतः चुंडा को "मेवाड/ राजस्थान का भीष्म पितामाह" कहा जाता है ।

7. राणा मोकल (1421–33) (हंसाबाई का बेटा)

कुंवर चुंडा मोकल का संरक्षक बनता है । हंसा बाई के अविश्वास की वजह से कुंवर चुंडा मालवा होंसंग शाह के दरबार मे चला जाता है । अब हंसा बाई का भाई रणमल संरक्षक बनता है ।

1433 में गुजरात के शासक अहमद शाह के आक्रमण को विफल करने के लिए जब मेवाड की सेना ने जीलवाडा (राजसमंद) मे पडाव डाल रखा था तो चाचा, मेरा, महपा पंवार ने मिलकर मोकल की हत्या कर दी ।

मोकल ने "एकलिंगजी के मन्दिर की चारदीवारी" का निर्माण करवाया एवं द्वारिकाधीश का निर्माण करवाया ।

मोकल ने 'भोज परमार' द्वारा बनवाया गया "त्रिभुवन नारायण मन्दिर" का जीर्णोद्धार करवाया जिसे वर्तमान में "मोकल का समीद्धेश्वर मंदिर" के नाम से जाना जाता है ।

8. राणा कुम्भा (1433–68)

- रणमल कुम्भा का संरक्षक था ।
- कुम्भा ने रणमल की सहायता से अपने पिता मोकल की हत्या का बदला लिया ।
- मेवाड दरबार में रणमल का प्रभाव बढ गया था । उसने सिसोदिया के नेता राघवदेव (चूण्डा का भाई) जो मालवा गया था, की हत्या करवा दी ।
- हंसाबाई ने चुंडा को वापस बुलाया तथा भारमली रणमल की प्रेमिका की सहायता से रणमल की हत्या कर दी ।
- इस समय रणमल का बेटा जोधा भी वहाँ मौजूद था जो भागकर काहुनी गाँव (बीकानेर) मे शरण लेता है ।
- 1453 में कुम्भा और जोधा के बीच "आंवल – बांवल की सन्धि" हुई ।
- इस संधि द्वारा जोधा को मन्डोर (मारवाड की राजधानी) वापस दे दिया गया ।
- सोजत (पाली) को मेवाड में मारवाड की सीमा बनाया गया, इस संधि मे जोधा की पुत्री श्रृंगार कंवर की शादी कुंभा के पुत्र रायमल के साथ तय हुई ।
- यह संधि हंसा बाई के मध्यस्था से सम्पन्न हुई थी ।

कुम्भा के शासनकाल के दौरान घटनाक्रम

सारंगपुर का युद्ध (1437 ई.)

कुम्भा VS महमूद खिलजी 1 (मालवा M.P)

कारण : महमूद खिलजी ने मोकल के हत्यारों को शरण दी थी । इस युद्ध में कुम्भा जीत गया खिलजी को बंदी बना लिया तथा इस जीत की याद में "विजयस्तम्भ" बनवाया ।

चम्पानेर की सन्धि – (1456)

कुतुबुद्दीन शाह + महमूद खिलजी 1

(गुजरात) (मालवा)

उद्देश्य : कुम्भा को पराजित करना एवं कुम्भा का राज्य आपस मे बाँट लेना ।

1457 में बदनौर (भीलवाडा)मे कुम्भा ने इन दोनों की संयुक्त सेना को पराजित कर दिया ।

कुम्भा ने सिरोही के राजा सहसमल देवडा को हराया । कुम्भा ने नागौर के उत्तराधिकारी संघर्ष में शम्स खाँ का साथ दिया, शम्स खाँ एवं मुजाहिद खाँ दोनो भाई थे । कुशालमाता के मंदिर का निर्माण करवाया ।

कुम्भा की सांस्कृतिक उपलब्धियाँ

स्थापत्य कला

1. विजयस्तम्भ (1440-1448) :- ''सारंगपुर युद्ध'' में जीत की याद में चित्तौड के किले में बनवाया था ।
   अन्य नाम: -कीर्ति स्तम्भ (कुम्भा की कीर्ति को बढाने वाला)
   - विष्णु ध्वज (विष्णु भगवान को समर्पित)
   - गरूड ध्वज (गरूड - विष्णु का वाहन)
   - मूर्तियों का अजायबघर
   - भारतीय मूर्तिकला का विश्वकोष
   - यह 9 मंजिला इमारत है ।
   - लम्बाई-चौडाई :- $122 \times 30\ (feet)$सीढियाँ - 156
     वास्तुकार :- जैता (पिता), पूंजा, पोमा, नापा (पुत्र)
     इसमें 9 मंजिल है जिसकी 8वी मंजिल मे कोई मूर्ति नही है ।

   - विजयस्तम्भ में 3वी मंजिल में 9 बार ''अरबी भाषा'' में अल्लाह लिखा हुआ है ।
   - ''स्वरूप सिंह'' ने इसका पुनर्निर्माण करवाया था ।
   - यह राजस्थान पुलिस व राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड एवं अभिनव भारत संगठन का प्रतीक चिन्ह है ।
   - 15 अगस्त 1949 को भारत सरकार ने इस पर एक रूपये का डाक टिकट जारी किया, यह राजस्थान प्रथम ईमारत है, जिस पर डाक टिकट जारी हुआ ।
   - इस पर कीर्ति स्तम्भ प्रशस्ति उत्कीर्ण की हुई है जिसके रचियता कवि अत्री व महेश है ।
   - ''जेम्स टॉड'' ने विजयस्तम्भ की तुलना ''कुतुबमीनार'' से की ।
   - ''फर्ग्यूसन'' ने विजयस्तम्भ की तुलना रोम के ''टार्जन टावर'' से की ।

जैन कीर्ति स्तम्भ: (आदिनाथ स्तम्भ)
12 वीं शताब्दी में जैन व्यापारी जीजा शाह बघेरवाल ने बनवाया
7 मंजिला इमारत है, 75 फीट ऊँची है ।
यह भगवान आदिनाथ को समर्पित है, अतः आदिनाथ स्मारक भी कहा जाता है ।

किले

कवि राजा श्यामलदास जी की पुस्तक वीर विनोद के अनुसार कुम्भा ने मेवाड के 84 किलों में से 32 किलो का निर्माण करवाया ।

(1) कुम्भलगढ :- (राजसमंद) वास्तुकार - मण्डन

- इस किले को मेवाड मारवाड का सीमा प्रहरी कहा जाता है ।
- इसका सबसे ऊँचा महल कटारगढ है जो कुम्भा का निजी आवास था इसे मेवाड की आँख कहा जाता है ।
- कुम्भलगढ प्रशस्ति का लेखक - महेश
- इस प्रशस्ति में कुम्भा को धर्म एवं पवित्रता का अवतार कहा गया है ।

(2) अचलगढ (सिरोही)
1452 में कुम्भा ने इसका पुनर्निमाण करवाया ।
(3) बासन्ती दुर्ग - सिरोही
(4) मचान दुर्ग - मेरो पर नियंत्रण के लिए ।
(5) भोमत दुर्ग - भील जनजाति पर नियंत्रण हेतु ।

चित्तौड
कुम्भलगढ → में कुम्भस्वामी मन्दिर का
अंचलगढ → निर्माण करवाया

- चित्तौड में श्रृंगार चँवरी मन्दिर बनायी ।
- एकलिंगी मीरा मंदिर एवं सारणेश्वर मंदिर का निर्माण करवाया ।
- 1439 में एक जैन व्यापारी ''धरणकशाह'' ने ''रणकपुर के जैन मन्दिर'' का निर्माण करवाया ।
- यहाँ पर चौमुखा मन्दिर सबसे महत्वपूर्ण है इस मन्दिर में आदिनाथ भगवान की मूर्ति है । इसमें 1444 स्तम्भ है इसलिए इसे ''स्तम्भों का अजायबघर'' कहा जाता है ।
- चौमुखा मन्दिर का वास्तुकार देपाक था ।

- ''कुम्भा'' को राजस्थान की ''स्थापत्य कला का जनक'' कहा जाता है ।

साहित्य

कुम्भा एक अच्छा संगीतज्ञ (वीणा) था ।
कुम्भा के संगीत गुरू ''सारंग व्यास'' थे ।
कुम्भा के अध्यात्मिक गुरू – हीरानंद
कुम्भा द्वारा रचित ग्रन्थ
– सुधा प्रबन्ध
– कामराज रतिसार
– संगीत सुधा
– संगीत मीमांसा
– संगीत राज
– हरिवार्तिका
– नृत्यरतन कोष
– नवीन गीत गोविन्द वाद्य
– संगीत रत्नाकर
– सुड प्रंबंध
– संगीत क्रम दिपिका

संगीतराज 5 भागों में विभाजित हैः–
– पाठ्य रत्न कोष
– गीत रत्न कोष
– नृत्य रत्न कोष
– वाद्य रत्न कोष
– रस रत्न कोष

(पढिये, गाईये, नाचो आपको बाद्य रस मिल जायेगा)

- जयदेव की गीतगोविन्द पर ''रसिकप्रिया'' नाम से टीका लिखी ।
- कुम्भा ने ''चण्डी शतक'' पर भी टीका लिखी थी ।
- कुम्भा ने मेवाडी भाषा में 4 नाटक लिखे थे , कुम्भा तीन भाषाओं का ज्ञाता था, मेवाडी, मराठी और कन्नड ।
- कुम्भा ''वीणा'' बनाया करता था ।

कुम्भा के दरबारी विद्धान

विद्धान	पुस्तक
1. कान्ह व्यास	एकलिंग महात्म्य – इसका प्रथम भाग स्वयं कुम्भ द्वारा रचित है, जो राजवर्णन कहलाता है ।
2. मेहा जी	तीर्थमाला
3. मण्डन	वास्तुसार देवमूर्ति प्रकरण राजवल्लभ रूपमण्डन – मूर्तिकला के बारे में कोदण्डमण्डन – धनुष निर्माण के बारे में शकून मण्डन प्रसाद मण्डन वैद्य मण्डन वास्तु मण्डन
4. नाथा (मण्डन का भाई)	वास्तुमंजरी
5. गोविन्द (मण्डन का बेटा)	द्वार दीपिका उद्धार धोरिणी कला निधि सार समुच्चय
6. रमा बाई (कुम्भा की बेटी)	– वागीश्वरी नाम से कविताएं लिख करती थी कुम्भा ने इसे जावर का परगना जागीर मे दिया था ।
7. तिला भट्ट 8. हीरानन्द मुनि	कुम्भा के गुरू, कविराजा की उपाधि कुम्भा ने दी ।

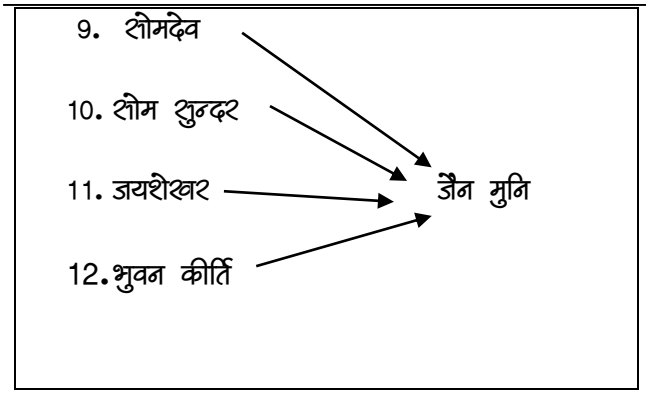

कुम्भा ने आबू जाने वाले जैन तीर्थ यात्रियों से कर लेना बन्द कर दिया था ।

कुम्भा की उपाधियाँ

हिन्दु सुरताण	(मुसलमानों को हराने के कारण)
अभिनव भरताचार्य	(संगीत की उपलब्धियों के कारण)
राणा रासौ / राय रायण / राय रासौ	(रासौ – साहित्य)
हालगुरू	(पहाडियों के दुर्ग जीतने के कारण)
चाप गुरू	(एक अच्छा धनुधार होने के कारण)
छाप गुरू	(छापामार (गुरिल्ला) युद्ध करने के कारण)
परम भागवत	विष्णु, गुप्त
आदि वराह	गुर्जर प्रतिहार
दान गुरू –	दानी शासक
अश्वपति	श्रेष्ठ घुरसवार
नरपति	मानवों मे श्रेष्ठ
राज गुरू	राजाओं मे श्रेष्ठ

कुम्भा को संगीत विश्वंभरों भी कहा जाता है ।
Note : कुम्भा को उन्माद रोग हो गया था, उसकी हत्या उसके बेटे ''उदा'' ने कुम्भलगढ के किले में कर दी थी ।

1. राणा संग्राम सिंह (सांगा) (1509–28)

- सांगाा का अपने भाईयों के साथ उत्तराधिकारी का झगडा होने पर सांगा भागकर सेवन्त्री गांव मे रूपनारायण जी के मंदिर मे शरण लेता है, यहां बीदा जैतमालोत सांगा की उडना राजकुमार पृथ्वी राज से (सांगाा का भाई) रक्षा करता हुआ मारा जाता है ।
- यहां से सांगा जान बचाकर श्रीनगर (अजमेर) मे करमचंद पंवार के यहां शरण लेता है ।
- कलान्तर में सांगा का भाई पृथ्वीराज एवं जयमल की मृत्य हो जाती है, सांगा मेवाड का शासक बनता है ।

2. खातोली का युद्ध (कोटा) – 1517

- सांगा V/s इब्राहिम लोदी (दिल्ली का सुल्तान)
- सांगा जीत गया ।

3. बाडी का युद्ध (धौलपुर) – 1519

- सांगा V/s इब्राहिम लोदी
- सांगा जीत गया ।

4. गागरौन का युद्ध (झालावाड) – 1519

- सांगा + मेदिनी राय v/s महमूद खिलजी (द्वितीय) (मालवा, M.P)
- सांगा जीत गया ।
- कारण : गागरौन का किला इस समय सांगा के दोस्त चन्देरी (M.P) के राजा मेदिनीराय के पास था ।
- ईडर का उत्तराधिकारी संघर्ष – 1520
- राणा सांगा v/s मुजफ्फर शाह 2 गुजरात

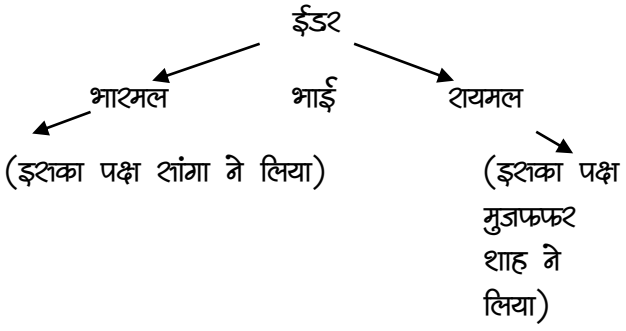

5. बयाना का युद्ध (16 फरवरी, 1527 ई.) (भरतपुर)

- सांगा V/s बाबर
- बाबर को हराया ।
- इस समय किले का रक्षक मेहन्दी ख्वाजा (बाबर का सेनापति) था ।
- बाबर ने मोहम्मद सुल्तान मिर्जा के नेतृत्व में सेना भेजी ।

6. खानवा का युद्ध : (रूपवास तहसील भरतपुर) : 17 मार्च 1527

- खानवा युद्ध मे बाबर विजय होता है, बाबर के विजय के निम्न कारण थे –
- (वीर विनोद श्यामदास के अनुसार 16 March)
- बाबर ने जिहाद की घोषणा की । (धर्मयुद्ध)
- बाबर ने शराब न पीने की कसम खाई व अपने चांदी के सारे पात्र तोड दिये ।
- बाबर ने इस युद्ध मे तुलुगमा पद्धित अपनाई ।
- हिंदुस्तान मे सर्वप्रथम तोपों का प्रयोग किया ।
- बाबर ने मुस्लिम व्यापारियों से तमगा कर हटा दिया ।
- बाबर ने इस युद्ध मे गाजी की उपाधि धारण की ।
- इस युद्ध से पूर्व सांगा ने भी राजपुताना की समस्त रियासतों को युद्ध में शामिल होने हेतु आमंत्रित किया जिसे पाती परवन की रस्म कहा जाता है, इस युद्ध में राजपुताना के निम्न शासक शामिल हुए ।

प्रमुख राजा जो युद्ध में शामिल हुये

1. आमेर – पृथ्वीराज
2. मारवाड – मालदेव (गंगा (राजा) का बेटा)
3. बीकानेर – कल्याणमल (राजा – जैतसी)
4. मेडता – वीरमदेव
5. चन्देरी – मेदिनीराय
6. सलूम्बर – रतनसिंह चूण्डावत
7. वागड – उदयसिंह
8. देवलिया – वाघ सिंह
9. मेवात – हसन खाँ मेवाती
10. ईडर – भारमल
11. इब्राहिम लोदी का छोटा भाई महमूद लोदी
12. सिरोही – अखेय राज देवडा
13. बिजोलिया – अशोक परमार
14. काठियावाड – झालाअज्जा
15. गोगुंदा – झाला सज्जा
16. जालौर – अखेय राज सौनगरा

- युद्ध में राणा सांगा के आंख मे तीर लग जाता है, राव मालदेव घायल सांगा को युद्ध स्थल से बाहर ले जाता है ।
- सांगा युद्ध में घायल हो गया अतः ''झाला अज्जा'' ने युद्ध का नेतृत्व किया । परन्तु बाबर युद्ध जीत गया था । जीतने (खानवा का युद्ध) के बाद बाबर ने ''गाजी की उपाधि'' (धर्म के लिए लडना) धारण की ।
- ''बसवा (दौसा)'' में सांगा का इलाज किया गया । (यहां सांगा की छतरी को निर्माण राजा पृथ्वीराज कच्छवहा ने करवाया)
- सांगा चंदेरी के मेदिनीराय की सहायता के लिए आगे बढा
- ''ईरिच (M.P)'' नामक स्थान पर कालपी के पास सांगा के साथियों ने उसे जहर दे दिया और उसकी मृत्य हो गयी ।
- ''मांडलगढ (भीलवाडा)'' में सांगा की छतरी है ।
- इतिहास में सांगा का नाम अन्तिम भारतीय हिन्दू सम्राट के रूप में अमर है ।

सांगा की उपाधियाँ

1. हिन्दुपत
2. सैनिको का भग्नावशेष (उसके शरीर पर 80 घाव थे)

Note:

- सांगा का बडा बेटा भोजराज था जिसकी शादी मीराबाई के साथ हुई थी ।
- सांगा के बाद रतनसिंह राजा बना । परन्तु यह बूँदी के राजा सूरजमल के साथ लडते हुए मारा गया था

1. विक्रमादित्य (1531–36)

- कम उम्र में राजा बना था इसलिए इसकी माता ''कर्मावती'' इसकी संरक्षिका बनी ।
- 1533 में गुजरात के शासक ''बहादुर शाह'' ने मेवाड पर आक्रमण किया, लेकिन कर्मावती ने रणथम्भौर का किला देकर संधि कर ली ।
- 1534 में बहादुर शाह ने पुनः आक्रमण कर दिया । लडाई के लिए सक्षम न होने के कारण कर्मावती मुगल बादशाह हुमायूँ को राखी भेजकर सहायता मांगती है । जौहर 1537–35 में किया गया ।
- लेकिन हुमायुँ के आने से पहले ही मेवाड में ''दूसरा साका'' हो जाता है ।
- रानी कर्मावती के नेतृत्व में 1300 महिलाओं ने जौहर किया, देवलिया के रावत बाघ सिंह के नेतृत्व मे राजपूत यौद्धाओ ने केसरी किया ।

राजस्थान के लोक नृत्य

क्षेत्रीय लोक नृत्य

जनजातीय लोक नृत्य

क्षेत्रीय लोक नृत्य

1. घूमर

- राजस्थान का "राज्य नृत्य"
- "लोकनृत्यों की आत्मा"
- केवल महिलाओं द्वारा तीज-त्यौहारो तथा अन्य अवसर पर किया जाता है ।
- महिलाऐं नृत्य करते समय अपनी धुरी पर ही घूमती रहती है ।
- इसमें महिलाओं द्वारा केवल हाथों का लचकदार संचालन किया जाता है ।
- मुख्य वाद्य यंत्र
  1. ढोल
  2. नगाडा
  3. शहनाई
- नृत्य में 8 चरण होते है जिन्हे "सवाई" कहा जाता है ।

2. कच्छी घोडी

- "शेखावाटी क्षेत्र" में पुरूषों द्वारा किया जाने वाला व्यावसायिक लोकनृत्य
- चार - चार पुरूष 2 पंक्तियों में नृत्य करते है ।
- नृत्य करते समय "फूल के खिलने तथा बन्द होने का दृश्य" दिखाई देता है ।
- इसमें पुरूष लकडी की बनी घोडी कमर से बाँध कर नृत्य करते है । (ऐसे लगता है जैसे घोडे पर बैठा है ।)
- इसके उद्भव के सम्बन्ध में लोक प्रसिद्ध कथा" है ।

3. अग्नि नृत्य

- "जसनाथी सम्प्रदाय" के लोगों द्वारा किया जाता है ।
- "कतरियासर (बीकानेर)" इसका प्रमुख केन्द्र है ।
- इसमें जलते हुये अंगारों पर नृत्य किया जाता है ।
- नृत्य करते समय "फते-फते" बोलते रहते है ।
- नृत्य करते समय "कृषि क्रियाऐ" करते है । जो भी क्रिया किसान खेत में करता हैं ।
- बीकानेर महाराजा गंगासिंह ने इस नृत्य को प्रोत्साहन दिया था ।
- इस नृत्य में केवल पुरूष ही भाग लेते है ।

4. ढोल नृत्य

- "जालौर क्षेत्र" का लोक नृत्य
- ढोली, मारी, सरगडा, भील जाति के पुरूषों द्वारा किया जाता है ।
- यह नृत्य "थाकना शैली" में किया जाता है ।
- जयनारायण व्यास ने इस नृत्य के कलाकारों को प्रोत्साहन दिया था ।
- इसको घुडले खां की बेटी गिंदोली ने शुरू किया ।

5. घुडला नृत्य

- जोधपुर में महिलाओं द्वारा "शीतलाष्टमी से लेकर गणगौर" तक यह नृत्य किया जाता है ।
- यह नृत्य जोधपुर के "राजा सातल" की याद में किया जाता है जिसने घुडले खाँ को मारा था
- इसमें महिलाऐं "सिर पर छिद्रित मटका रखकर" नाचती है ।
- यह नृत्य रात्रि में किया जाता है ।
- मटके में जलता हुआ दीपक रखा जाता है ।
- मणिशंकर गांगुली, कोमल कोठारी तथा देवीलाल सामर ने इस नृत्य के कलाकारों को प्रोत्साहन दिया था ।
- कोमल कोठारी को 2 बार पदम् पुरस्कार प्राप्त हुआ था ।
- कोमल कोठारी ने विजयदान देथा के साथ मिलकर 1960 में "बोरून्दा (जोधपुर)" में "रूपायन संस्थान" की स्थापना की ।
- देवीलाल सामर ने 1952 में उदयपुर में "भारतीय लोक कला मण्डल" की स्थापना की । जो कठपूतली खेल के लिए जाना जाता है ।

6. तेरहताली नृत्य

- ''कामडिया पंथ'' की महिलाओं द्वारा रामदेवजी के मेले के समय नृत्य किया जाता है ।
- अब यह एक ''व्यावसायिक लोक नृत्य'' है ।
- इसमें 9 मंजीरे दाँये पैर में तथा 2 मंजीरे कोहनियों के पास बाँधकर एवं 2 मंजीरे हाथ में लेकर बैठ कर नृत्य किया जाता है । कुल 13 मंजीरे
- नृत्य करते समय महिलाऐं करतब दिखाती है । (मुँह से रूमाल उठाना आदि)
- मुख्य केन्द्र : पादरला (पाली)
- मुख्य कलाकार : मांगीबाई, कमलदास, परमदास
- वाद्य यंत्र : तानपुरा, चौतारा, मंजीरे

7. चरी नृत्य

- किशनगढ क्षेत्र में ''गुर्जर महिलाओं'' द्वारा किया जाने वाला लोक नृत्य
- सिर पर चरी रखकर नाचती है ''चरी में जलते हुऐ कपास के बीज'' रखे जाते है ।
- मुख्य कलाकार : फलकू बाई

फलका – गेहूँ की रोटी
सोगरा – बाजरे की रोटी
बेजड– मिश्रित अनाज की रोटी

8. भवाई नृत्यः मटका नृत्य

''उदयपुर संभाग'' में भवाई जाति द्वारा किया जाने वाला लोक नृत्य– इसमें संगीत पर कम ध्यान दिया जाता है तथा करतब अधिक दिखाये जाते है ।
जैसेः अंगारो पर नाचना, तलवार पर नाचना, सिर पर 7.8 मटके रखकर नाचना

9. गींदड नृत्य

- शेखावाटी क्षेत्र में होली के अवसर पर पुरूषों द्वारा किया जाने वाला लोकनृत्य
- गोल घेरो में पुरूष डण्डे टकराते हुए नृत्य करते है ।
- जो पुरूष महिलाओं के कपडे पहनकर नाचता है उसे ''गणगौर'' कहा जाता है ।
- मुख्य वाद्य यंत्र – ''नगाडा''

10. बम नृत्य

- ''भरतपुर क्षेत्र'' में पुरूषों द्वारा किया जाने वाला लोक नृत्य
- बम नृत्य डीग तहसील का प्रसिद्ध है ।
- मुख्य वाद्य यंत्र ''नगाडा''
- इसे ही बम कहा जाता है ।
- इसमें गाये जाने वाले गीत को ''रसिया'' कहा जाता है ।
- अतः इस नृत्य को ''बम रसिया'' भी कहा जाता है ।

11. चंग नृत्य

- होली के अवसर पर ''शेखावाटी क्षेत्र'' में

12. बिन्दौरी नृत्य

- होली के अवसर पर ''झालावाड क्षेत्र'' में तथा विवाहोत्सव पर किया जाता है ।

13. डांग नृत्य

- होली के अवसर पर ''नाथद्वारा क्षेत्र'' में
- वल्लभ संप्रदाय के अनुयायियों द्वारा भगवान श्रीनाथजी की आराधना में ।

जनजातीय लोक नृत्य

1. भील	2. गरासिया	3.कालबेलिया	4.कंजर	5. कथौडी	6. मेव	7. सहरिया
गैर	वालर	चकरी	चकरी	मावलिया	रणबाजा	शिकारी
गवरी (राई नृत्य)	मॉंदल	शंकरिया	धाकड	होली	रतबई	
युद्ध	लूर	बागडिया				
द्विचक्री	कूद	पणिहारी				
नेजा	जावरा	इंडोणी				
घूमरा	मोरिया					
हाथीमना	गौर					

भील

1. गैर

- मेवाड क्षेत्र में भील जनजाति का एक लोक नृत्य
- यह लोकनृत्य मारवाड में भी होली के अवसर पर किया जाता है तथा इसमें सभी जाति, धर्म के लोग शामिल होते है ।
- गोलघेरे में डण्डे टकराते हुए पुरूषों द्वारा नृत्य किया जाता है ।
- मुख्य केन्द्र : कनाना (बाडमेर)
- नृत्य में पहने जाने वाले कपडे – झोंगी

2. गवरी

- यह धार्मिक नृत्य है ।
- मेवाड में भील पुरूषों द्वारा किया जाने वाला नृत्य रक्षाबन्धन के अगले दिन से शुरू होकर 40 दिन तक चलता है । इसे ''राई नृत्य'' भी कहा जाता है ।

  युद्ध : तलवार, भाले के साथ (बेहद भयानक नृत्य) युद्ध कला का प्रदर्शन करते है ।

  द्विचक्री : दो चक्र बनाकर, विवाह के अवसर पर

3. नेजा

- यह भील तथा मीणा दोनो जनजातीयों से सम्बन्धित है महिला तथा पुरूष दोनों भाग लेते है ।
- इसमें लकडी के एक डण्डे पर नारियल बॉंध दिया जाता है । महिलाऐं इस नारियल की रक्षा करती है तथा पुरूष इसें उतारने का प्रयास करते है ।

4. घूमरा

- बांसवाडा क्षेत्र में भील महिलाओं द्वारा किया जाता है ।
- दो दल होते है एक दल गाता है तथा दूसरा दल घूम-घूम कर नाचता है ।

5. हाथीमना

- विवाह के अवसर पर पुरूषों द्वारा घुटनों के बल बैठकर नृत्य किया जाता है ।

गरासिया

1. वालर

- बिना वाद्य यंत्र के किया जाता है ।
- महिला तथा पुरूष दोनो भाग लेते है ।
- नृत्य करते समय 2 वृत बनते है ।
- यह विवाह के अलावा होली व गणगौर पर भी किया जाता है ।

2. मांदल

- मांदल वाद्य यंत्र के साथ किया जाता है ।
- एक प्रकार का वाद्य यंत्र

3. लूर

- लूर गौत्र की गरासिया महिलाओं द्वारा यह नृत्य किया जाता है ।
- नृत्य करते समय महिलाओं के 2 पक्ष होते है
  1. वर पक्ष
  2. वधु पक्ष

  इसमें वर पक्ष की महिलाएँ वधु पक्ष से कन्या की मांग करती है ।

4. कूद

बिना वाद्य यंत्र के तालियों की थाप पर नृत्य

5. ज्वारा

गरासिया महिलाओं द्वारा होली के समय हाथों में ज्वार लेकर नृत्य किया जाता है ।

6. मोरिया

विवाह के समय गरासिया पुरूषों द्वारा किया जाने वाला नृत्य

7. गौर

गणगौर के समय किया जाने वाला

कालबेलिया

1. चकरी

- महिलाऐ गोलाकार मुद्रा में तेज-तेज नृत्य करती है ।
- मुख्य कलाकार :- गुलाबों (2015 में पद्मश्री दिया गया)

2. शंकरिया

- प्रेम कहानी पर आधारित कालबेलिया युग्ल नृत्य
- नृत्यागना, कंचन सपेरा, गुलाबो, कमली, राजकी

3. बागडिया

- भीख माँगते समय कालबेलिया महिलाओं द्वारा
  नोटः- कालबेलिया नृत्य सिखाने के लिए हाथी गाँव (आमेर) में स्कूल खोला ।
- मुख्य वाद्य यंत्रः 1. पूंगी 2. खंजरी
- कालबेलिया नृत्य यूनेस्को की हैरिटेज लिस्ट में शामिल है ।

कंजर

1. चकरी

- महिलाओं द्वारा (अविवाहित लडकिया ही भाग लेती है)
- चकरी नृत्य करते समय महिला - अस्सी कली का घाघरा पहनती है ।

2. धाकड

- कंजर पुरूषों द्वारा

कथौडी

1. मावलियाः- पुरूषों द्वारा नवरात्रे के समय
2. ढोलकी व बांसुरी प्रमुख वाद्य यंत्र है ।

होली

- महिलाओं द्वारा होली के समय
- महिलाऐं नृत्य करते समय पिरामिड बनाती है ।
- ''फडका साडी'' पहन कर नृत्य करती है ।

राजस्थान के लोक नाट्य

ख्याल

- ऐतिहासिक एवं पौराणिक कहानियों पर संगीत के माध्यम से अभिनय किया जाता है ।
- ख्याल के सूत्रधार को "हलकारा" कहा जाता है ।

1. कुचामनी ख्याल

- केवल पुरूष भाग लेते है ।
- संस्थापक : "लच्छीराम" (10 ख्यालों की रचना)

प्रवर्तक

- मुख्य कलाकार : उमराज
- मुख्य कहानियाँ – मीरा मंगल
  राव रिडमल
  चाँद नील गिरी

2. जयपुरी ख्याल

- इस ख्याल में महिलाऐ भी भाग लेती है ।
- इसमें नये प्रयोग करने की सम्भावना होती है ।
- कलाकार – हमीदुल्ला (ख्याल भारमली)

3. अलीबख्शी ख्याल

- ये ख्याल "मुंडावर (अलवर)" के नवाब अली बख्श के समय शुरू हुई थी ।
- अली बख्श को अलवर का रसखान कहा जाता है ।
- कृष्ण लीला, निहालदे, चन्द्रावत, गुलकावती आदि ।

4. शेखावाटी ख्याल/चिडावी ख्याल

प्रवर्तक : नानूराम जी
मुख्य कलाकार : "दुलिया राणा" (चिडावा)
ख्याल – हीर-रांझा, जयदेव, भृर्तहरि, आल्हादेव

5. हैला ख्याल

(जोर-जोर से बोल के)

- मुख्य क्षेत्र : लालसौट (दौसा)
- सवाई माधोपुर – प्रारंभ होने से पूर्व
- मुख्य वाद्य यंत्र – "नौबत"
- बम वाद्य यंत्र का प्रयोग

6. ढप्पाली ख्याल

- मुख्य वाद्य यंत्र : डफ (चंग)
- मुख्य क्षेत्र : भरतपुर, अलवर के लक्ष्मणगढ में

7. कन्हैया ख्याल

- प्रमुख क्षेत्र : करौली
- इसमें सुत्रधार – "भेडिया" कहते है ।
- वाद्य यंत्र – नौबत, घेरा, मंजीरा व ढोलक

भेंट के दंगल:

मुख्य क्षेत्र – बाडी, बसेडी (धौलपुर)

8. तुर्रा कलंगी

प्रवर्तक : तुकनगीर, शाहअली

- चंदेरी के राजा (मेदिनीराय) ने इनके अभिनय से खुश होकर इन्हे तुर्रा, कलंगी भेंट दिये थें ।
- सहेदू सिंह, हमीद बेग ने इसे चित्तौड में लोकप्रिय किया ।
- इसमें 2 पक्ष आपस संवाद करते है जिसे "गम्मत" कहा जाता है ।

2 पक्ष
1. शिव पक्ष
2. पार्वती पक्ष

- शिव पक्ष के झण्डे का रंग भगवा तथा पार्वती पक्ष के झण्डे का रंग "हरा" होता है ।
- एकमात्र लोकनाट्य जिसमें मंच की सजावट की जाती है ।
- एकमात्र लोकनाट्य जिसमें दर्शक भी भाग लेते है ।

मुख्य कलाकार

- चेतराम
- ओंकार सिंह
- जयदयाल सोनी

मुख्य केन्द्र

- घोसुण्डा
- निम्बाहेडा

→ चित्तौडगढ

नौटंकी

- भरतपुर में लोकप्रिय है ।
- प्रचलन – डींग निवासी भूरीलाल ने किया ।
- ''हाथरस शैली'' से प्रभावित है ।
- इनमें 9 प्रकार के वाद्य यंत्रों का प्रयोग किया जाता है । महिला तथा पुरूष दोनों भाग लेते है ।
- प्रवर्तक :भूरीलाल जी,
- मुख्य कलाकार : गिरिराज प्रसाद
- मुख्य कहानियाँ :
  1. अमर सिंह राठौड
  2. आल्हा – ऊदल
  3. सत्यवान – सावित्री
  4. लैला–मंजनू

रम्मत

- जैसलमेर व बीकानेर क्षेत्र में लोकप्रिय है ।
- होली के समय ''फाल्गुन शुक्ल अष्टमी'' से लेकर चतुर्दशी तक रम्मत लोकनाट्य किया जाता है ।
- रम्मत शुरू करने से पहले ''रामदेवजी का भजन'' गाते है ।
- रम्मत का अर्थ–रमने वाला अर्थात् खेल होता है ।
- जैसलमेर में इसे ''तेज कवि'' ने लोकप्रिय किया । इसने ''स्वतंत्र बावनी'' की रचना की तथा इसे गांधीजी को भेंट किया । रम्मत के मुख्य कलाकार तेरिये होते है ।
- तेज कवि ने अपने नाटकों में अंग्रेजी नीतियों का विरोध किया
- बीकानेर में ''पुष्करणा ब्राह्मणों'' द्वारा रम्मत का आयोजन पाटो पर किया जाता है ।
- आचार्यों का चौक – अमरसिंह राठौड की रम्मत
- बारह गुवाड – हेडाउ – मेरी की रम्मत (इसे जवाहर लाल जी ने प्रारम्भ किया था)
- बीकानेर में रम्मत के मुख्य कलाकार:
  1. फागु महाराज
  2. तुआ महाराज
  3. मनीराम व्यास
  4. तुलसी दास

तमाशा

- मूल रूप से महाराष्ट्र का लोकनाट्य है ।
- ''सवाई प्रताप सिंह'' के समय जयपुर में लोकप्रिय हुआ ।
- इसके लिए ''बंशीधर भट्ट'' को महाराष्ट्र से लेकर आये ।
- जिस खुले मैदान में तमाशा का आयोजन होता है उसे ''अखाडा'' कहा जाता है ।
- जयपुर की प्रसिद्ध नृत्यांगना ''गौहर जान'' तमाशा में भाग लेती थी ।
- वाद्य यंत्र – हारमोनियम, तबला, सारंगी, नक्कारा

मुख्य कहानियाँ

1. जुठ्ठन मियां का तमाशा (शीतला अष्टमी)
2. जोगी – जोगण का तमाशा

   मुख्य कलाकार : गोपी कृष्ण जी भट्ट – तमाशा के उस्ताद

   संगीत प्रभाकर की उपाधि

गवरी

- राजस्थान का सबसे प्राचीन लोकनाट्य इसे ''भेरू लोकनाट्य'' भी कहते है ।
- यह मेवाड के भीलों का धार्मिक लोकनाट्य है जो रक्षाबन्धन के अगले दिन से शुरू होकर 40 दिन तक चलता है ।
- इसमें केवल पुरूष भाग लेते है ।

मुख्य वाद्य यंत्र

1. माँदल
2. थाली

- यह लोकनाट्य ''शिव-भस्मासुर'' की कहानी पर आधारित है। इसमें शिव को ''राई बुडिया'' तथा पार्वती को 'गवरी' कहा जाता है।
- इसका सूत्रधार ''कुटकुडिया'' कहलाता है।
- हास्य कलाकार ''झटपटिया'' कहलाता है।

मुख्य कहानियाँ

1. कान-गुजरी
2. बन्जारा - बन्जारी
3. अकबर - बीरबल

अलग अलग कहानियों को जोडने के लिए बीच में नृत्य किया जाता है, जिसे ''गवरी की घाई'' कहते है।

स्वांग

- ऐतेहासिक एवं पौराणिक पात्रों के कपडे पहनकर उनका अभिनय करना स्वांग कहलाता है।
- इसके कलाकार को ''बहुरूपिया'' कहा जाता है।
- भीलवाडा में लोकप्रिय है।
- होली के अवसर पर किया जाता है।

मुख्य कलाकार

1. परशुराम
2. जानकी लाल भांड (चिडावा) इनको मंकी मेन भी कहा जाता है।

माण्डल में (भीलवाडा) ''चैत्र कृष्ण त्रयोदशी'' को ''नाहरों का स्वांग'' किया जाता है।

चारबैत

- मूल रूप से अफगानिस्तान का लोकनाट्य है।
- पहले यह ''पश्तो भाषा'' में प्रस्तुत किया जाता था।
- राजस्थान के टोंक क्षेत्र में लोकप्रिय है।
- ''नवाब फैंजुल्ला खाँ (टोंक)'' के समय करीम खाँ ने इसे स्थानीय भाषा में प्रस्तुत किया था।
  मुख्य वाद्य यंत्र - डफ
  उपनाम - नवाबों की विद्या

भवाई

- ''उदयपुर संभाग'' की भवाई जाति का लोकनाट्य
- इसमें मुख्य महिला (सगीडी) व पुरूष(सगाडी) कहा जाता है।
- इसमें कलाकार मंच पर आकर अपना परिचय नहीं देते।
- ''शान्ता गाँधी'' के नाटक ''जसमल ओडण'' पर भवाई लोकनाट्य किया जाता है जो अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्ध है।

मुख्य कलाकार : बाघजी (केकडी)

- यह एक व्यावसायिक लोकनाट्य है।
- ओड जनजाति तालाब खोदने का काम करती थी।

रामलीला

- इसे तुलसीदास जी द्वारा शुरू किया गया था।
- बिसाऊ (झुन्झुनु) में ''मूक रामलीला'' होती है।
- ''अटरू'' (बारां) में धनुष को भगवान राम नहीं तोडते बल्कि जनता द्वारा तोडा जाता है।
- भरतपुर में वेंकटेश रामलीला होती है।
- मांगरौल (बारां) की रामलीला ढाई कडी की है।

रासलीला

- वल्लभाचार्य जी द्वारा प्रारम्भ किया गया था।
  मुख्य केन्द्रः कामां (भरतपुर) फूलेरा (जयपुर)
- ब्रज की राई जाति व्यवसायिक रूप से करती है।

सनकादिक लीला

मुख्य केन्द्र :

1. घोसुण्डा (चित्तौड)-आश्विन में
2. बस्सी(चित्तौड) कार्तिक में

गौर लीलाः

- आबू क्षेत्र की ''गरासिया जनजाति'' द्वारा
- चैत्र शुक्ल तृतीया पर गरासिये गोर लीला करते है।